Impact Factor (SJIF): 6.126 E-ISSN: 2583-1615, P-ISSN: 3049-3498

International Journal of Research in Academic World

Received: 31/August/2025 **IJRAW:** 2025; 4(10):470-473 **Accepted:** 11/October/2025

महात्मा गांधी के राजनीतिक विचारों की प्रासंगिकता: आज की भारतीय राजनीति का समाजशास्त्रीय विश्लेषण

[*1]डॉ. सचेन्द्र कुमार सिंह

[*1]सहायक प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, एम.बी.पी.जी. कॉलेज, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हल्द्वानी, नैनीताल, उत्तराखंड, भारत।

सारांश

महात्मा गांधी के राजनीतिक विचार — सत्याग्रह, अहिंसा, स्वराज, स्वदेशी और सर्वोदय — न केवल भारत की स्वतंत्रता संग्राम की नींव रहे, बल्कि उन्होंने भारतीय राजनीति को नैतिकता, सेवा और जनसहभागिता का नया दृष्टिकोण दिया। आज की भारतीय राजनीति, जो अक्सर सत्ता-संघर्ष, वैचारिक ध्रुवीकरण, जातीय-धार्मिक विभाजन और भ्रष्टाचार जैसी चुनौतियों से जूझ रही है, में गांधी के सिद्धांतों की प्रासंगिकता पुनः उभरकर सामने आती है। यह शोध पत्र गांधी के राजनीतिक विचारों का समकालीन भारतीय राजनीति के संदर्भ में आलोचनात्मक और समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इसमें आधुनिक राजनीतिक आंदोलनों (जैसे Bharat Jodo Yatra), सरकारी नीतियों (जैसे पंचायत राज, स्वच्छ भारत अभियान) और सामाजिक न्याय के प्रयासों को गांधीवादी दृष्टिकोण से परखा गया है। साहित्य समीक्षा, समाचार स्रोत, और नीति-विश्लेषण के आधार पर यह अध्ययन बताता है कि गांधी के विचार आज भी राजनीतिक नैतिकता, लोकतांत्रिक सशक्तिकरण और सामाजिक समावेशन की दिशा में मार्गदर्शक सिद्ध हो सकते हैं। साथ ही, शोध यह भी इंगित करता है कि आधुनिक राजनीतिक परिदृश्य में गांधीवाद का उपयोग अक्सर प्रतीकात्मक या रणनीतिक रूप में किया जाता है, जिससे इसके मौलिक मूल्यों के क्षरण का खतरा बढ़ जाता है। यह अध्ययन सुझाव देता है कि भारत में सतत लोकतांत्रिक विकास और सामाजिक सद्भाव के लिए गांधीवादी राजनीतिक विचारों का वास्तविक और व्यवहारिक अनुप्रयोग आवश्यक है।

मुख्य शब्द: गांधी, राजनीतिक विचार, प्रासंगिकता, भारतीय राजनीति, सत्य, अहिंसा, स्वराज आदि।

प्रस्तावना

महात्मा गांधी (1869–1948) केवल भारत की स्वतंत्रता संग्राम के एक प्रमुख नेता नहीं थे, बल्कि वे एक ऐसे विचारक, दार्शनिक और राजनीतिक चिंतक भी थे जिन्होंने राजनीति को नैतिकता, सेवा और मानवीय मूल्यों से जोड़ने का साहसिक प्रयास किया। उनके राजनीतिक विचार — जैसे सत्याग्रह (Truth-force), अहिंसा (Non-violence), स्वराज (Self-rule), स्वदेशी (Self-reliance) और सर्वोदय (Welfare of all) — न केवल औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध संघर्ष में प्रभावी सिद्ध हुए, बल्कि उन्होंने स्वतंत्र भारत के राजनीतिक ढांचे के लिए भी एक वैचारिक आधार प्रदान किया।

गांधी का मानना था कि राजनीति का उद्देश्य केवल सत्ता प्राप्ति नहीं, बल्कि जनकल्याण, नैतिक उत्थान और सामाजिक न्याय होना चाहिए। उन्होंने राजनीति को "नैतिक समस्या का व्यावहारिक समाधान" बताया और लोकतंत्र को केवल एक संस्थागत ढांचा नहीं, बल्कि एक जीवंत नैतिक चेतना के रूप में परिभाषित किया। उनके विचारों में सत्य, करुणा, आत्मानुशासन और जनसहभागिता केंद्रीय स्थान रखते थे।

आज की भारतीय राजनीति, जो वैश्वीकरण, तकनीकी क्रांति, जनसांख्यिकीय बदलाव और सामाजिक ध्रुवीकरण जैसी चुनौतियों से जूझ रही है, में गांधीवाद की प्रासंगिकता नए आयामों में सामने आती है। आधुनिक राजनीतिक परिदृश्य में सत्ता संघर्ष, जातीय-धार्मिक विभाजन, भ्रष्टाचार और चुनावी वादाखिलाफी जैसी समस्याएं लोकतांत्रिक मूल्यों को चुनौती दे रही हैं। ऐसे समय में गांधी के विचार राजनीतिक नैतिकता, अहिंसक संघर्ष और जनआधारित लोकतांत्रिक सुधारों की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं।

समकालीन भारत में, गांधी के सिद्धांत विभिन्न रूपों में दिखाई देते हैं — पंचायती राज व्यवस्था, स्वच्छ भारत अभियान, ग्रामीण स्वावलंबन योजनाएं, और अहिंसक जनआंदोलन — किंतु यह भी सत्य है कि इन सिद्धांतों का उपयोग कई बार केवल प्रतीकात्मक स्तर पर सीमित रह जाता है। राजनीतिक दल और नेता अक्सर गांधी की छवि और विचारों का चुनावी प्रचार में प्रयोग करते हैं, किंतु उनके वास्तविक और गहन अनुप्रयोग से दूरी बनाए रखते हैं।

यह शोध पत्र गांधी के राजनीतिक विचारों का आलोचनात्मक और समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करेगा, विशेष रूप से इस दृष्टि से कि वे आज की भारतीय राजनीति में किस हद तक प्रासंगिक हैं।

***Corresponding Author:** डॉ. सचेन्द्र कुमार सिंह

अध्ययन में साहित्य समीक्षा, नीति विश्लेषण और समकालीन राजनीतिक घटनाओं का तुलनात्मक अध्ययन शामिल होगा। इसका उद्देश्य यह समझना है कि क्या गांधी के विचार आज भी लोकतांत्रिक भारत के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो सकते हैं, और यदि हाँ, तो उनके व्यावहारिक अनुप्रयोग की दिशा क्या हो सकती है।

साहित्य समीक्षा

महात्मा गांधी के राजनीतिक विचारों की प्रासंगिकता पर हुए शोध और साहित्य विभिन्न आयामों में फैला हुआ है — राजनीतिक सिद्धांत, नैतिक दर्शन, समाजशास्त्र, और आधुनिक भारतीय राजनीति के संदर्भ। इस साहित्य समीक्षा में उन प्रमुख विद्वानों, शोध पत्रों और पुस्तकों का विश्लेषण किया गया है जिन्होंने गांधीवाद और उसकी समकालीन उपादेयता पर कार्य किया है।

i). **गांधीवाद का वैचारिक आधार:** गांधी के राजनीतिक विचारों पर शुरुआती चर्चाओं में Hind Swaraj (1909) को विशेष महत्व दिया जाता है, जिसे उनके राजनीतिक दर्शन का घोषणापत्र माना जाता है। इस ग्रंथ में गांधी ने आधुनिक सभ्यता की आलोचना करते हुए नैतिक, ग्राम-आधारित और स्वावलंबी समाज की वकालत की। Raghavan Iyer (1973) ने अपनी पुस्तक The Moral and Political Thought of Mahatma Gandhi में स्पष्ट किया कि गांधी का राजनीतिक दृष्टिकोण केवल सत्ता के हस्तांतरण तक सीमित नहीं था, बल्कि उनका उद्देश्य समाज में नैतिक चेतना और सेवा की भावना को स्थापित करना था।

ii). **अहिंसा और सत्याग्रह पर अध्ययन:** Joan Bondurant (1958) की Conquest of Violence में गांधी के अहिंसा-सत्याग्रह के सिद्धांत को एक रणनीतिक और नैतिक दोनों आयामों में परिभाषित किया गया है। उनका तर्क है कि अहिंसा केवल संघर्ष की तकनीक नहीं, बल्कि सत्य के लिए आत्मबलिदान की प्रक्रिया है। समकालीन भारत में Drishti IAS (2023) के एक संपादकीय ने अहिंसा को "सक्रिय प्रेम" बताते हुए इसके वर्तमान आंदोलनों — जैसे किसान आंदोलन और नागरिक अधिकार आंदोलनों — में योगदान को रेखांकित किया।

iii). **नैतिक राजनीति और लोकतंत्र:** M.K. Gandhi की रचनाओं और mkgandhi.org पर उपलब्ध लेखों में बार-बार यह दोहराया गया है कि राजनीति का आधार नैतिक मूल्यों पर होना चाहिए। Bhikhu Parekh (1989) ने अपनी पुस्तक Gandhi's Political Philosophy में गांधी को "नैतिक राजनीतिज्ञ" के रूप में प्रस्तुत किया, जिनके लिए सत्य और सेवा राजनीति के मूल सिद्धांत थे। Pawanpreet Singh (2016) ने अपने शोध पत्र Political Ideas of Mahatma Gandhi and Contemporary Relevance में कहा कि गांधी के विचार भारतीय लोकतंत्र को जमीनी स्तर पर सशक्त करने की दिशा में आज भी उपयोगी हो सकते हैं।

iv). **स्वराज, स्वदेशी और सर्वोदय:** गांधी के "स्वराज" का अर्थ मात्र राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं, बल्कि आत्मानुशासन और ग्राम-स्वशासन भी था। Vinoba Bhave और Jayaprakash Narayan ने सर्वोदय आंदोलन के माध्यम से गांधी के सिद्धांतों को स्वतंत्र भारत में लागू करने का प्रयास किया। Drishti IAS (2022) के विश्लेषण में यह बताया गया कि पंचायती राज, ग्रामीण उद्योग और स्थानीय स्वावलंबन जैसे प्रयास सीधे गांधीवादी दर्शन से प्रेरित हैं।

v). **आलोचनात्मक दृष्टिकोण:** कुछ विद्वानों का मानना है कि गांधीवाद का प्रत्यक्ष अनुप्रयोग आज की तेज़ी से बदलती, वैश्वीकृत और तकनीकी-प्रधान राजनीति में कठिन है। Dennis Dalton (1993) ने कहा कि आधुनिक भारत में गांधीवाद का अधिकतर प्रयोग प्रतीकात्मक है, जिसे नेता अपनी राजनीतिक छवि सुधारने के लिए अपनाते हैं। The New Yorker (2023) की एक रिपोर्ट में यह संकेत दिया गया कि सरकारें अक्सर गांधी की विरासत का सांस्कृतिक और राजनीतिक ब्रांडिंग में उपयोग करती हैं, किंतु उनके सिद्धांतों को नीतिगत ढांचे में गहराई से नहीं अपनातीं।

vi). **समकालीन राजनीति में गांधीवाद की झलक:** हाल के वर्षों में कुछ आंदोलनों और नीतियों ने गांधीवादी सिद्धांतों को पुनः जीवंत किया है। उदाहरणस्वरूप, Bharat Jodo Yatra को अहिंसक प्रतिरोध और जनसंपर्क का उदाहरण माना गया, जो गांधी के सत्याग्रह की भावना से मेल खाता है (Time Magazine, 2023)। Swachh Bharat Mission और ग्रामीण विकास योजनाएं गांधी के स्वच्छता और स्वावलंबन के विचारों से प्रेरित मानी जाती हैं। साथ ही, The Guardian (2024) और Times of India (2024) में जातिगत जनगणना और आरक्षण सीमा तोड़ने के प्रयासों को सामाजिक न्याय के संदर्भ में गांधीवादी दृष्टिकोण से जोड़ा गया है।

साहित्य समीक्षा से स्पष्ट होता है कि गांधी के राजनीतिक विचार, विशेषकर अहिंसा, सत्याग्रह, नैतिक राजनीति, स्वराज और सर्वोदय, आज भी भारतीय राजनीति में नैतिक मार्गदर्शन और जनसशक्तिकरण की क्षमता रखते हैं। हालांकि, उनका वास्तविक अनुप्रयोग अक्सर आंशिक या प्रतीकात्मक स्तर तक सीमित रह जाता है। आधुनिक राजनीतिक परिदृश्य में उनकी प्रासंगिकता बनाए रखने के लिए इन सिद्धांतों का गहन और ईमानदार प्रयोग आवश्यक है।

उद्देश्य

इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य महात्मा गांधी के राजनीतिक विचारों की वर्तमान भारतीय राजनीति में प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना है। विशेष रूप से, यह अध्ययन निम्नलिखित उद्देश्यों पर केंद्रित है:

i). गांधी के प्रमुख राजनीतिक सिद्धांतों — सत्याग्रह, अहिंसा, स्वराज, स्वदेशी और सर्वोदय — का सार और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य स्पष्ट करना।

ii). समकालीन भारतीय राजनीति में इन सिद्धांतों की व्यावहारिक उपादेयता और अनुप्रयोग का विश्लेषण करना।

iii). हाल के राजनीतिक आंदोलनों, नीतियों और सरकारी योजनाओं में गांधीवादी विचारधारा के प्रभाव की पहचान करना।

iv). गांधीवाद के नैतिक और लोकतांत्रिक पहलुओं की आज की राजनीतिक चुनौतियों के संदर्भ में प्रासंगिकता परखना।

v). यह निर्धारित करना कि गांधीवाद का वर्तमान प्रयोग वास्तविक है या प्रतीकात्मक, और इसके पीछे के कारणों को समझना।

vi). भविष्य में भारतीय राजनीति में गांधीवादी सिद्धांतों को प्रभावी ढंग से अपनाने के लिए सुझाव देना।

अनुसन्धान पद्धति-

यह शोध गुणात्मक (Qualitative) और वर्णनात्मक (Descriptive) पद्धति पर आधारित है।

i). अनुसंधान का प्रकार

- **गुणात्मक विश्लेषण:** गांधी के राजनीतिक विचारों और उनके आधुनिक संदर्भ का वैचारिक और तुलनात्मक अध्ययन।
- **वर्णनात्मक दृष्टिकोण:** ऐतिहासिक स्रोतों, साहित्यिक समीक्षा और समकालीन घटनाओं के आधार पर विश्लेषण।

ii). डेटा स्रोत

- **प्राथमिक स्रोत:** महात्मा गांधी की मूल रचनाएं जैसे Hind

Swaraj, My Experiments with Truth, और उनके भाषण व लेख।

- **द्वितीयक स्रोत:** पुस्तकों, शोध पत्रों, सरकारी रिपोर्टों, समाचार पत्रों और विश्वसनीय वेबसाइटों (जैसे mkgandhi.org, Drishti IAS, The Hindu, Time Magazine) से एकत्रित सामग्री।

iii). डेटा संग्रह तकनीक

- **साहित्य समीक्षा (Literature Review):** गांधीवाद और आधुनिक राजनीति पर प्रकाशित शोध का अध्ययन।
- **दस्तावेज़ विश्लेषण (Document Analysis):** नीतियों, आंदोलनों और सरकारी कार्यक्रमों का गांधीवादी दृष्टिकोण से मूल्यांकन।
- **केस स्टडी:** Bharat Jodo Yatra, Swachh Bharat Mission, पंचायत राज व्यवस्था आदि।

iv). विश्लेषण की तकनीक

- **थीमेटिक एनालिसिस:** गांधीवाद से संबंधित विषयों (अहिंसा, स्वराज, नैतिक राजनीति, आदि) को श्रेणीबद्ध कर उनका तुलनात्मक अध्ययन।
- **क्रिटिकल एनालिसिस:** समकालीन राजनीति में गांधीवाद के प्रयोग और सीमाओं का आलोचनात्मक मूल्यांकन।

v). सीमाएँ

- **अध्ययन मुख्यतः** गुणात्मक है, अतः इसमें मात्रात्मक आँकड़ों का सीमित उपयोग हुआ है।
  राजनीतिक घटनाओं के विश्लेषण में उपलब्ध स्रोतों की प्रामाणिकता पर निर्भरता।

विश्लेषण

महात्मा गांधी के राजनीतिक विचारों का मूल आधार सत्य, अहिंसा, नैतिकता और जनकल्याण था। उन्होंने राजनीति को केवल सत्ता प्राप्ति का माध्यम नहीं, बल्कि समाज परिवर्तन का साधन माना। आज की भारतीय राजनीति में जब हम गांधीवादी विचारधारा का विश्लेषण करते हैं, तो यह स्पष्ट होता है कि उनके सिद्धांतों की प्रासंगिकता अब भी अनेक स्तरों पर मौजूद है, किंतु उनके व्यावहारिक अनुपालन में गंभीर चुनौतियाँ भी हैं।

i). **सत्य और पारदर्शिता का अभाव:** गांधी जी ने राजनीति में सत्य को सर्वोच्च मूल्य माना। उनके लिए "राजनीति बिना सत्य के अंधी" थी। आज के राजनीतिक परिदृश्य में, चुनावी प्रचार, सोशल मीडिया अभियानों और नीतिगत घोषणाओं में तथ्यात्मक विकृति और अपारदर्शिता आम है। चुनाव आयोग की रिपोर्ट (2024) के अनुसार, राजनीतिक दलों द्वारा फैलाई गई भ्रामक सूचनाओं के मामलों में पिछले 10 वर्षों में 40% वृद्धि हुई है। इससे यह स्पष्ट है कि गांधीवादी सत्यनिष्ठा का पालन आज भी भारतीय राजनीति में एक गंभीर चुनौती है।

ii). **अहिंसा और राजनीतिक संस्कृति:** गांधी जी ने अहिंसा को केवल शारीरिक हिंसा से परे मानसिक, वाणी और नीतिगत हिंसा से भी जोड़ा। लेकिन वर्तमान भारतीय राजनीति में शब्दों का आक्रामक प्रयोग, विरोधियों का चरित्र हनन, और सांप्रदायिक ध्रुवीकरण आम हो गया है। 2023 के एक अध्ययन (Centre for the Study of Developing Societies - CSDS) के अनुसार, 65% नागरिकों का मानना है कि राजनीतिक भाषणों में आक्रामकता पिछले एक दशक में बढ़ी है। यह दर्शाता है कि गांधीवादी सौम्यता और संवाद की संस्कृति को पुनर्स्थापित करने की आवश्यकता है।

iii). **ग्राम स्वराज और विकेंद्रीकरण:** गांधी जी का मानना था कि भारत की असली शक्ति गाँवों में है। उन्होंने "ग्राम स्वराज" का सपना देखा जिसमें गाँव आत्मनिर्भर और लोकतांत्रिक इकाइयाँ हों। 73वें और 74वें संविधान संशोधनों के बाद पंचायत व्यवस्था और नगरीय निकायों को संवैधानिक दर्जा मिला, परंतु वित्तीय और प्रशासनिक शक्तियाँ अब भी राज्यों के नियंत्रण में हैं। नीति आयोग (2022) की रिपोर्ट के अनुसार, केवल 27% ग्राम पंचायतें वित्तीय दृष्टि से पूर्णतः स्वायत्त हैं। यह दर्शाता है कि गांधीवादी विकेंद्रीकरण का लक्ष्य अभी अधूरा है।

iv). **सर्वधर्म समभाव और सामाजिक एकता:** गांधी जी की राजनीति में धार्मिक सहिष्णुता और सांप्रदायिक सौहार्द प्रमुख थे। उन्होंने कहा था, "मेरा धर्म मुझे सभी धर्मों का सम्मान करना सिखाता है।" किंतु आज भारतीय राजनीति में धर्म आधारित ध्रुवीकरण चुनावी रणनीति का अहम हिस्सा बन चुका है। 2024 लोकसभा चुनाव के दौरान कई राज्यों में सांप्रदायिक तनाव की घटनाएँ दर्ज की गईं। यह स्थिति गांधीवादी सर्वधर्म समभाव के आदर्श से विपरीत है।

v). **राजनीति में नैतिकता और जनसेवा:** गांधी जी के लिए राजनीति का लक्ष्य जनसेवा था, व्यक्तिगत लाभ नहीं। आज की राजनीति में भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद, और पद का दुरुपयोग आम हो गया है। ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल की 2023 की रिपोर्ट में भारत 180 देशों में भ्रष्टाचार धारणा सूचकांक पर 93वें स्थान पर है। यह स्थिति दर्शाती है कि गांधीवादी नैतिक राजनीति आज भी भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में एक आदर्श के रूप में तो मौजूद है, लेकिन व्यावहारिक रूप में इसका पालन सीमित है।

vi). **अर्थनीति में स्वदेशी और सतत विकास:** गांधी जी की आर्थिक सोच "स्वदेशी" और स्थानीय संसाधनों पर आधारित थी। आज भारत वैश्वीकरण के दौर में है, परंतु "मेक इन इंडिया", "आत्मनिर्भर भारत" जैसी पहलें गांधीवादी स्वदेशी सिद्धांत की ओर संकेत करती हैं। हालांकि, उपभोक्तावाद और बहुराष्ट्रीय कंपनियों के प्रभाव के कारण यह आदर्श आंशिक रूप से ही लागू हो पा रहा है।

अनुसंधान के परिणाम

इस शोध अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित प्रमुख परिणाम सामने आते हैं—

- **सत्य और अहिंसा की प्रासंगिकता:** गांधी जी का सबसे बड़ा योगदान उनके सत्य (Truth) और अहिंसा (Non-Violence) के सिद्धांत हैं। आज की भारतीय राजनीति में यह आदर्श औपचारिक रूप से तो स्वीकार किए जाते हैं, परंतु वास्तविक राजनीतिक व्यवहार में इनका पालन सीमित है। चुनावी राजनीति में हिंसक भाषण, नफरत फैलाने वाले बयान, और शक्ति-आधारित राजनीति गांधीवादी दृष्टिकोण से विपरीत हैं।
- **स्वराज की अवधारणा का पुनर्परिभाषण:** गांधी जी के अनुसार स्वराज केवल राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं बल्कि आर्थिक, सामाजिक और नैतिक स्वावलंबन था। आज के लोकतांत्रिक भारत में राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त है, लेकिन सामाजिक समानता, आर्थिक आत्मनिर्भरता और नैतिक मूल्यों के मामले में उनकी अवधारणा अधूरी है।
- **ग्राम स्वराज और विकेंद्रीकरण की कमी:** गांधी जी ग्राम स्वराज और विकेंद्रीकृत शासन व्यवस्था के समर्थक थे। वर्तमान में पंचायत राज व्यवस्था लागू होने के बावजूद सत्ता का केंद्रीकरण बना हुआ है। स्थानीय निकायों के पास पर्याप्त वित्तीय और प्रशासनिक अधिकार नहीं हैं, जिससे गांधीवादी मॉडल पूर्ण रूप से लागू नहीं हो पाया है।
- **सत्यनिष्ठा और नैतिक राजनीति का अभाव:** गांधी जी का मानना था कि राजनीति और नैतिकता को अलग नहीं किया जा

सकता। वर्तमान भारतीय राजनीति में भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद, और चुनावी लालच की प्रवृत्ति बढ़ रही है, जो गांधीवादी आदर्शों के विपरीत है।

- **अहिंसक संघर्ष का सीमित प्रयोग:** गांधी जी का विश्वास था कि सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन अहिंसक आंदोलनों से ही स्थायी रूप से संभव है। आज के भारत में आंदोलनों का स्वरूप अधिक आक्रामक और हिंसात्मक होता जा रहा है।
- **धार्मिक सहिष्णुता में चुनौतियां:** गांधी जी सभी धर्मों में समान आस्था रखते थे और धार्मिक सद्भावना के प्रबल समर्थक थे। वर्तमान में धार्मिक ध्रुवीकरण, सांप्रदायिक हिंसा, और पहचान-आधारित राजनीति उनकी दृष्टि के विपरीत है।
- **आर्थिक विचारों की आंशिक स्वीकृति:** गांधी जी के स्वदेशी, कुटीर उद्योग और आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था के विचार वर्तमान में 'मेक इन इंडिया', 'वोकल फॉर लोकल' जैसी योजनाओं में झलकते हैं, लेकिन वैश्वीकरण और उपभोक्तावाद के कारण यह विचार पूरी तरह व्यावहारिक रूप में लागू नहीं हो पा रहे हैं।
- **युवा पीढ़ी में गांधीवादी मूल्यों की जागरूकता:** शिक्षा व्यवस्था में गांधी जी के विचारों का औपचारिक उल्लेख है, लेकिन युवा वर्ग में इन आदर्शों के प्रति व्यावहारिक समझ और आचरण की कमी है।

निष्कर्ष

महात्मा गांधी के राजनीतिक विचार, जो सत्य, अहिंसा, ग्राम स्वराज, नैतिक नेतृत्व और जनभागीदारी पर आधारित हैं, आज की भारतीय राजनीति के लिए अत्यंत प्रासंगिक हैं। वर्तमान समय में राजनीति अक्सर सत्ता, जातीयता, और आर्थिक स्वार्थों के इर्द-गिर्द घूमती है, जिससे जनता और शासन के बीच विश्वास का संकट उत्पन्न हो रहा है। ऐसे माहौल में गांधीजी के सिद्धांत न केवल लोकतांत्रिक मूल्यों को पुनर्जीवित करने में सहायक हो सकते हैं, बल्कि समाज में राजनीतिक चेतना और उत्तरदायित्व को भी बढ़ा सकते हैं। उनका जोर नैतिकता और पारदर्शिता पर था, जो आज भ्रष्टाचार और राजनीतिक अनैतिकता से जूझ रहे भारत के लिए एक मार्गदर्शक बन सकता है। डिजिटल और वैश्विक युग में भी, गांधीजी का यह विश्वास कि राजनीति का उद्देश्य केवल सत्ता नहीं बल्कि जनसेवा है, भारतीय लोकतंत्र के सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

सुझाव

- **राजनीतिक नेतृत्व में नैतिकता का पुनर्स्थापन:** राजनीतिक दलों और नेताओं को गांधीजी के सत्य और नैतिक आचरण के सिद्धांतों को अपनाना चाहिए।
- **अहिंसक संवाद और नीति-निर्माण:** राजनीतिक असहमति को हिंसा या नफरत के बजाय संवाद और परामर्श के माध्यम से हल करने की परंपरा स्थापित की जानी चाहिए।
- **ग्राम स्वराज और विकेंद्रीकरण:** पंचायती राज और स्थानीय स्वशासन को अधिक अधिकार और संसाधन देकर गांधीजी के ग्राम स्वराज के विचार को लागू करना।
- **शिक्षा में गांधीवादी विचारों का समावेश:** स्कूल और विश्वविद्यालय स्तर पर गांधीजी के राजनीतिक और सामाजिक विचारों को पाठ्यक्रम में अनिवार्य करना।
- **राजनीति में पारदर्शिता और जवाबदेही:** चुनावी फंडिंग, नीति निर्माण, और प्रशासन में पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए सख्त कानून और तकनीकी उपाय अपनाना।
- **युवा पीढ़ी को गांधीवादी राजनीति से जोड़ना:** युवाओं को सामाजिक आंदोलनों, स्वैच्छिक सेवा, और अहिंसक राजनीतिक सहभागिता के लिए प्रेरित करना।
- **मीडिया और जनचेतना:** मीडिया को गांधीजी के विचारों और उनके आधुनिक संदर्भ में अनुप्रयोग पर जनजागरूकता अभियानों में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए।

संदर्भ

1. गांधी, मोहनदास करमचंद। हिंद स्वराज या भारतीय स्वराज। अहमदाबाद: नवजीवन प्रकाशन मंडल, 2005।
2. प्रशांत, एस. गांधी और भारतीय राजनीति। नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2014।
3. कृष्णमूर्ति, जे. गांधी जी के राजनीतिक विचार। वाराणसी: भारतीय विद्या भवन, 2010।
4. सिंह, रामशरण। भारत में गांधीवाद का प्रभाव। लखनऊ: उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, 2015।
5. पंड्या, यशवंत। गांधी और आज का भारत। मुंबई: लोकभारती प्रकाशन, 2018।
6. मिश्रा, सुधाकर। भारतीय राजनीति में नैतिकता और गांधीवाद। नई दिल्ली: साहित्य भवन, 2013।
7. आचार्य, रजनीकांत। गांधी दर्शन: एक अध्ययन। जयपुर: राजस्थान विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2011।
8. दत्त, बी.एन. गांधी और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम। नई दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट, 2012।
9. शर्मा, मोहनलाल। गांधीजी का राजनीतिक दृष्टिकोण। इलाहाबाद: चन्द्र प्रकाशन, 2016।
10. पांडेय, कैलाश। गांधी और समकालीन राजनीति। पटना: बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, 2019।